

असंयति स्त्री. (तत्.) 1. शरीर की क्रियाओं जैसे- मूत्रत्याग या मलत्याग आदि पर नियंत्रण न रख पाना 2. असंयत होने का दुर्गुण।
incontinence

असंयम पुं. (तत्.) 1. संयम का अभाव, मन, इंद्रिय आदि को वश में न रखने की स्थिति, अपने को काबू में न रखे जाने की स्थिति 2. विलासिता विलो. संयम।

असंयमी वि. (तत्.) जो संयमी न हो, चंचल मन वाला। विलो. संयमी।

असंयुक्त वि. (तत्.) जो संयुक्त अर्थात् आपस में जुड़ा या मिला न हो, विभाजित, बिखरा हुआ, अलग विलो. संयुक्त।

असंयोग पुं. (तत्.) 1. संयोग का न होना 2. सम्मिलन का अभाव; अवसर का अभाव, संपर्क निषिद्ध होने की स्थिति विलो. संयोग।

असंलक्ष्य वि. (तत्.) 1. जिसे लक्षित न किया जा सके, ध्यान में न आने योग्य 2. दुर्बोध विलो. संलक्ष्य।

असंलक्ष्यक्रम ध्वनि स्त्री. (तत्.) काव्य. अभिधामूला ध्वनि का एक विशेष भेद जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्रतीति का क्रम संलक्षित नहीं होता, व्यंजना केवल आनंद उत्पन्न करती हैं और सहृदय सामाजिक (श्रोता या पाठक) उस अनुभूति में इतना खो जाता है कि क्रम की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता।

असंलक्ष्यक्रम वि. (तत्.) जिसका क्रम ध्यान में न आ सके। इस संदर्भ में काव्यशास्त्र में 'शतपत्रवेधन' का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है जैसे- कमल के सौ पत्तों को बाण चलाकर बेध दिया जाए तो सारे एक साथ बेधे जान पड़ते हैं, यद्यपि सारे पत्ते एक क्रम से ही बिंधते हैं पर यह क्रम ध्यान में आना कठिन होता है।

असंवृत्त वि. (तत्.) जो ढँका हुआ न हो, जो छिपा न हो, खुला हुआ, प्रकट।

असंवेदना स्त्री. (तत्.) 1. चित्त की वह अवस्था जिसमें सुख-दुख, मान-अपमान आदि का बोध

नहीं होता आयु. शरीर के किसी अंग का सुन्न हो जाना।

असंवेदिता स्त्री. (तत्.) संवेदनहीन होने की स्थिति।

असंशय वि. (तत्.) संशयरहित, बेशक, क्रि.वि. निस्संदेह पुं. संशय का अभाव, संदेह या शक का न होना।

असंशोधित वि. (तत्.) 1. बिना कमाया हुआ (चमड़ा) 2. संस्कृत न की गई खाद्य वस्तु।
unprocessed

असंशृत वि. (तत्.) 1. जिसका पालन-पोषण न हुआ हो 2. जिसका पालन-पोषण प्रकृति ने ही किया हो, प्रकृतिजन्य, प्राकृतिक।

असंश्लिष्ट वि. (तत्.) जो मिला हुआ या जुड़ा न हो, पृथक, अलग विलो. संश्लिष्ट।

असंसक्त वि. (तत्.) 1. जो संसक्त न हो 2. आसक्ति रहित, अनासक्त विलो. संसक्त।

असंसक्ति वि. (तत्.) 1. संबद्धता का अभाव 2. लगाव का न होना, जुड़े/सटे/मिले न होने का भाव या स्थिति, विरक्ति 3. निर्लिप्तता, राग का अभाव विलो. संसक्ति।

असंसदीय वि. (तत्.) 1. जो संसद की गरिमा, मर्यादा, कार्यविधि, परंपरा आदि के प्रतिकूल हो 2. जो संसद में कहने या करने योग्य न हो 3. अशिष्ट 4. जो संसद का विषय न हो।

असंसदीय भाषा. स्त्री. (तत्.) ऐसी भाषा जिसका संसद या विधानमंडल में प्रयोग करना अशोभनीय, परंपरा के विरुद्ध अथवा पीठासीन अधिकारी के निर्णयानुसार वर्जित होता है।

असंसारी वि. (तत्.) 1. संसार की सभी बातों से अलग, विरक्त, जो इस संसार में नहीं होता, निरासक्त 2. अभौतिक, अलौकिक, दिव्य।

असंसृति स्त्री. (तत्.) 1. संसृति अर्थात् प्रवाह का अभाव 2. पुनर्जन्म का न होना, मोक्ष।

असंसृष्ट वि. (तत्.) 1. जो दूसरों से संबद्ध या मिला न हो 2. साथ न रहने वाला विलो. संसृष्ट।